अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





पर्यटन
Tourism

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पर्यटन Tourism

अध्याय शीर्षक	पर्यटन
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Tourism**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

पर्यटन Tourism

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – पर्यटन का संक्षिप्त वर्णन

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पर्यटन

बुन्देलखण्ड में दो टाइगर रिजर्व है। एक एमपी में है दूसरा उत्तर प्रदेश में है। रानीपुर टाइगर रिजर्व उत्तर प्रदेश में है। यह रिजर्व 536.29 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। इसके आसपास घूमने के लिए तुलसी जलप्रपात, शबरी जलप्रपात, मार्कंडेय आश्रम, धारकुण्डी आश्रम, राघव प्रपात जैसे पर्यटन स्थल उपस्थित हैं। यह स्थान चित्रकूट से 48 किलोमीटर दूर मानिकपुर ब्लाक के मारकुण्डी वन क्षेत्र में स्थित है रीछों की जनसंख्या बहुतायत में होने पर इसका नाम जामवंत केन्द्र भी रखा गया है।

बान्दा शहर में घूमने के लिए बहुत सारे क्षेत्र हैं जहां पर पर्यटकों के लिए विकसित किया जा सकता है। जिनमें कुछ है –मन्दिर, किले, मस्जिद, सन्ग्रहालय, पुलिस लाइन से कालू कुआ की तरफ जाते हुए लगभग 1 किलोमीटर दूर एक पुलिस चौकी है। इस पुलिस चौकी के अंदर जनरल व्हिट लॉक की सेना की स्मृति बनी हुई है। इसके बिल्कुल बराबर में अस्पताल है और काफी पुराने समय से प्रशासनिक और पुलिस के अफसर के निवास भी हैं।

बान्दा में विभिन्न हिन्दू मन्दिर, चर्च, जैन मन्दिर, गुरुद्वारा, मस्जिदें हैं। शहर के बाहर 18वीं शताब्दी के क़िले व कालिन्जर के अवशेष हैं। मुस्लिमों, मराठों, फ्रॉंसीसियों और अंग्रेज़ों के बीच चले सन्घर्षों के दौरान इस शहर व कालिन्जर का शासन बदलता रहा।

बुन्देलखण्ड छत्रसाल सन्ग्रहालय, बान्दा

बुन्देलखण्ड छत्रसाल सन्ग्रहालय वर्तमान में खण्डहर में तब्दील हो चुका है व पूरी तरह खत्म हो कर नामोनिशान भी नहीं बचा है।

किसी भी स्थान के सभी कालखण्डों का इतिहास एक ही इमारत में प्रदर्शित किया जा सकता है, जिसे सन्ग्रहालय कहा जाता हैं। बान्दा में सन्ग्रहालय की लम्बे समय से आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इसी कारण से, 1955ई0 अर्थात लगभग आठ दशक पहले, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा बान्दा में बुन्देलखण्ड छत्रसाल सन्ग्रहालय (बीसीएम) की स्थापना की गई थी। यह कुछ कमरों वाला एक छोटा सा निर्माण था। कुछ अगणित समस्याओं के कारण, सन्ग्रहालय को बन्द कर दिया गया और ताला लगा दिया गया। असामाजिक तत्वों ने इसकी खिड़कियां तोड़ दीं और अधिकांश प्राचीन और मूल्यवान वस्तुओं को निकाल लिया। अब, बीसीएम खण्डहर में है और कुछ प्राचीन चट्टान की मूर्तियाँ बाहर पड़ी हैं। एएसआई को मूर्तियों की सुरक्षा और सन्ग्रहालय के पुनर्निर्माण के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए। इस स्थिति में कौन अनधिकृत से अधिकृत हो गया, सबको पता होगा लेकिन जान्च में निल बटा सन्नाटा आयेगा।

बुन्देलखण्ड छत्रसाल सन्ग्रहालय की स्थापना 1955 में हुई थी और इसमें विभिन्न प्रकार के मानवशास्त्रीय और पुरातत्व सन्ग्रह मौजूद थे। यह बहुउद्देश्यीय प्रकार का सन्ग्रहालय था। मूर्तियां, टेराकोटा, पत्थर के औजार, मोती और मुहरें, सिक्के, मानवशास्त्रीय वस्तुएँ, प्राकृतिक विज्ञान अनुभाग की वस्तुएँ प्रदर्शित थी।

स्थान– पुलिस लाइन से कालू कुआं के रास्ते पर, पुलिस लाइन से 1.5 किलोमीटर दूर स्थित है व सरकारी दस्तावेजों में 3 बीघा जमीन थी, लेकिन अधिकृत अधिकारियों के आन्ख बन्द करने के कारण, अनधिकृत कब्जे के कारण बुन्देलखण्ड छत्रसाल सन्ग्रहालय, बान्दा ढूढ़ने से भी नही मिलेगा, कोशिश करो।

भ्रमण का समय–
ग्रीष्म –सुबह 7.30 बजे से 11.00 बजे तक और दोपहर 3.00 बजे से शाम 5.30 बजे तक
सर्दी –सुबह 8.00 बजे से 11.00 बजे तक और दोपहर 2.30 बजे से शाम 5.00 बजे तक ही भ्रमण का समय रहता था।

यहां बुधवार की छुट्टी रहती थी। रु1

गोमेद रत्नों/शजर, बान्दा

प्रसिद्धि तथा इतिहास बान्दा केन नदी के तल से प्राप्त गोमेद रत्नों/शजर के लिए प्रसिद्ध है, जिनका यहां से बड़ी मात्रा में निर्यात किया जाता है।

पर्यटन Tourism

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

गोसाई छतरी

लेखक अरविंद कुमार त्रिपाठी जब आसपास के गांव में भ्रमण के लिए गया तो उसने देखा कि गांव के बाहर की तरफ कुछ मंदिर की तरह की छतरियां बनी हुई है जिनके अंदर कुछ भी नहीं है और बाहर भी कुछ नहीं लिखा हुआ है। बुजुर्गों से प्रार्थना करने पर पता चला कि यह गुसाईयों की समाधि स्थल और इन्हीं के आसपास कहीं ना कहीं एक शिव मंदिर अवश्य मिलेगा जो मिले भी। अछरौंड गांव में भी तालाबों के किनारो पर कुछ समाधि स्थल मिले जिन्हें राजस्थान में छतरी भी कहा जाता है और गांव में उनको समाधि स्थल बोलते रहे हैं। इससे पता चलता है कि हिम्मत बहादुर जो एक शिष्य बनकर गोसाई हो चुका था, की सेना ने इन बान्दा के आसपास के गांव में अपने लोग पहुंचाए थे और गांव में रहते हुए उन्होंने अपने लिए समाधि स्थल भी बनाए। बान्दा और आसपास का इलाका गोसाईयों के अधीन रहा है, सिद्ध करता है। बान्दा और आसपास के इलाके में आजकल कोई भी गोसाई नजर नहीं आता। गोसाई लोगों ने अपने जमीन जायदाद घर सब कुछ स्थानीय लोगों को बेच दिया और यहां से पलायन कर गए जो कि उनकी परिस्थितियों को जाहिर करता है।

बान्दा में भी महेश्वरी देवी रोड छोटी बाजार बान्दा में एक गोसाईगंज है जहां राधा कृष्ण का मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। इसके अलावा बान्दा के आसपास मवई गांव में गोसाई तालाब भी है।

बान्दा आसपास में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थल निम्न मुख्य है।

0	नाम	स्थान	वर्ग	विवरण
1	बुन्देलखण्ड छत्रसाल	बान्दा	सन्ग्रहालय	
2	काली देवी मन्दिर	बान्दा	मन्दिर	
3	महेश्वरी देवी मन्दिर	बान्दा	मन्दिर	
4	भूरागढ़	बान्दा	किला	
5	राजापुर	बान्दा	मन्दिर	रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्म स्थली
6	नवाब टैंक	बान्दा	तालाब	
7	पीला चर्च	बान्दा	चर्च	
8	खत्री पहाड	स्योढ़ा	मन्दिर	
9	कोल्हुआ	बदौसा	जानवर	
10	नीलकंठ मन्दिर	कालिन्जर	किला	
11	चार पत्थरों का स्तम्भ	कालिन्जर	किला	
12	कालिन्जर किला	कालिन्जर	मदिर	नीलकंठ मन्दिर, अजेय दुर्ग, शैलचित्र, शेरशाह सूरी का मकबरा
13	चित्रकूट	चित्रकूट	मन्दिर	भगवान श्री राम की वनस्थली एवं बुन्देलखण्ड की धर्म स्थली
14	महोबा	महोबा		वीर आल्हा ऊदल की कर्म स्थली
15	खजुराहो	खजुराहो	मन्दिर	शिल्पकला युक्त मन्दिर विश्व धरोहर
16	पन्ना	पन्ना	जन्गल	नेशनल टाईगर रिजर्व,
17	मऊ सहानियां	छतरपुर	सन्ग्रहालय	महाराज छत्रसाल का सन्ग्रहालय
18	कुण्डेश्वर	टीकमगढ	मन्दिर	प्रसिद्ध शंकर भगवान का मन्दिर
19	चरखारी,	चरखारी,		
20	कालपी	जालौन	मन्दिर	महर्षि वेदव्यास जी का आश्रम, भगवान नरसिन्ह का अवतार क्षेत्र, वीरबल की जन्म स्थली

पर्यटन Tourism

21 केशरुआ	मानिकपुर	जन्गल	रानीपुर टाईगर रिजर्व क्षेत्र का मारकुन्डी रेन्ज
22 देवान्गाना	चित्रकूट	जन्गल	रानीपुर टाईगर रिजर्व क्षेत्र का मारकुन्डी रेन्ज
23 ददरी पाठा	मानिकपुर	जन्गल	रानीपुर टाईगर रिजर्व क्षेत्र का मारकुन्डी रेन्ज
24 केकरामार	मानिकपुर	जन्गल	रानीपुर टाईगर रिजर्व क्षेत्र का मारकुन्डी रेन्ज
25 ऐंचवारा	मानिकपुर	जन्गल	रानीपुर टाईगर रिजर्व क्षेत्र का मारकुन्डी रेन्ज
26 बेधक	मानिकपुर	जन्गल	रानीपुर टाईगर रिजर्व क्षेत्र का मारकुन्डी रेन्ज
27 चन्दहरा	मानिकपुर	जन्गल	रानीपुर टाईगर रिजर्व क्षेत्र का मारकुन्डी रेन्ज
28 बान्दा बाबा	मानिकपुर	जन्गल	रानीपुर टाईगर रिजर्व क्षेत्र का मारकुन्डी रेन्ज
29 ककरेडी	मानिकपुर	जन्गल	रानीपुर टाईगर रिजर्व क्षेत्र का मारकुन्डी रेन्ज
30 रानीपुर	मानिकपुर	जन्गल	वन्य अभ्यारण्य
31 कलचिहा	बरगढ़	जन्गल	
32 झांसी	झांसी	किला	प्रथम स्वतंत्रता सन्ग्राम सेनानी वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई की कर्म स्थली
33 उरई	जालौन		मामा माहिल का स्थान
34 अजयगढ	अजयगढ	किला	राजा अजय पाल द्वारा निर्मित दुर्ग, अमन महल
35 मैहर	मैहर	मन्दिर	माता शारदा का भव्य स्थान
36 टीकमगढ़			

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

अन्य स्थान

द्रोणागिरी,	द्रोणागिरी,	
ओरछा	ओरछा	किला रामराजा सरकार का सिध्द मन्दिर, महाराजा वीर सिन्ह जू देव द्वारा निर्मित दुर्ग, जहांगीर महल, लाला हरदौल का स्थान
ग्वालियर	ग्वालियर	किला मोतीमहल, जयविलास महल, गुजरी महल, तानसेन व मुहम्मद गौस खां का मकबरा
गुना	गुना	गुफाएं
गढकुण्डार	गढकुण्डार	किला राजा खेतसिन्ह खन्गार का अजेय दुर्ग
उनावबाला जी	दतिया	मन्दिर प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर
दतिया	दतिया	मन्दिर पीताम्बरा सिद्धेश्वर पीठ
सोनागिरी	सोनागिरी	मन्दिर जैन मन्दिरो का अद्‌भुत स्थान
पांडवफाल,		
देवगढ,		
नैनागिरी,		
पनगरा,		
हमीरपुर,		
ललितपुर,		
बिजावर,		
सरीला,		
भैरों की झरिया		

उपर्युक्त आदि दर्शनीय स्थल हैं। ये स्थान आज भी ऐतिहासिक धरोहरों को सहेजे हुये हैं। इन सभी स्थलों का इतिहास में बहुत महत्व है।

कैसे जाएँ

वायु मार्ग – यहां का सबसे निकटतम हवाई अड्डा खजुराहो और लखनऊ है।

रेल मार्ग – भारत के कई प्रमुख शहरों से बान्दा रेल मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है।

सड़क मार्ग – सड़क मार्ग द्वारा भारत के कई प्रमुख शहरों से बान्दा पहुंचा जा सकता है। यह ज़िला कानपुर, इलाहाबाद, चित्रकूट, फ़तेहपुर, महोबा, हमीरपुर और मध्य प्रदेश के कई प्रमुख ज़िलों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है।

सड़क मार्ग द्वारा लखनऊ से बान्दा ज़िले की दूरी 219 किलोमीटर है।

जनसन्ख्या

शहर की जनसन्ख्या 1,34,822 (2001) इतनी है और बान्दा ज़िला की कुल जनसन्ख्या 15,00,253 लगभग है।

रानीपुर वन्य अभ्यारण्य

उत्तर प्रदेश के बान्दा ज़िले में स्थित है। इस अभ्यारण्य की स्थापना वर्ष 1973 में की गई थी। रानीपुर अभ्यारण बान्दा से 80 किलोमीटर और इलाहाबाद से 350 किलोमीटर की दूरी पर है।

पर्यटन Tourism

यह अभ्यारण्य लगभग 230 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है।

अभ्यारण में कई तरह के पशु, जैसे– चीता, तेंदुआ, भालू, साम्भर, फिशिंग कैट और चिंकारा आदि देखे जा सकते हैं।

रानीपुर अभ्यारण्य में घूमने के लिए सबसे उचित समय नवम्बर से जून का है।
यहां आने वाले पर्यटकों के लिए माणिकपुर, रानीपुर, चौरी और मरकुण्डी आदि में फ़ोरस्ट रेस्ट हाउस की सुविधा भी उपलब्ध है।

रामघाट

मन्दाकिनीनदी के किनारे बने घाटों पर धार्मिक गतिविधियों का निरंतर गतिशील और परिवर्तनशील दृश्य देखने को मिलता है । यहां, भजनों के उच्चारण और धूपबत्ती की मधुर सुगंध के बीच, भगवा वस्त्र पहने पवित्र पुरुष मौन ध्यान में बैठते हैं या यहां आने वाले असन्ख्य तीर्थयात्रियों को अपने ज्ञान का आशीर्वाद देते हैं। नदी पर सुबह की पहली किरण के साथ ही, रामघाट में जीवन की हलचल शुरू हो जाती है, क्योंकि सभी उम्र के श्रद्धालु पानी में पवित्र डुबकी लगाते हैं और देवताओं का आशीर्वाद मांगते हैं। दिन भर, दोपहर के बाद यह गतिविधि रंगों और आस्था की सहज अभिव्यक्ति के साथ बढ़ती जाती है, जो धीरे–धीरे कम होती जाती है, क्योंकि डूबता सूरज नदी में बहते फूलों की पंखुड़ियों के चमकीले रंगों को चुनता है, जबकि शाम की आरती गहराती शाम के साथ अपनी मधुर लय में होती है। हर समय, रामघाट में गहरी और स्थायी आस्था देखने को मिलती है, जो चित्रकूट की पवित्रता का सम्मान करने वाले अनुष्ठानों में अभिव्यक्त होती है। मन्दाकिनी के लहरदार नीले–हरे पानी को नावों से पार किया जा सकता है, जो किराए पर आसानी से उपलब्ध हैं।

कामदगिरि

कामदगिरि, मूल चित्रकूट, प्रमुख धार्मिक महत्व का स्थान है। एक वनाच्छादित पहाड़ी, यह अपने आधार के साथ–साथ मन्दिरों की एक श्रृंखला से घिरा हुआ है और आज इसे राम के पवित्र अवतार के रूप में पूजा जाता है। भरत मिलाप मन्दिर यहां स्थित है, जो उस स्थान को चिह्नित करता है जहाँ भरत ने राम से मुलाकात की थी ताकि उन्हें अयोध्या के सिन्हासन पर वापस जाने के लिए राजी किया जा सके। बहुत से श्रद्धालु हैं जो वरदान या आशीर्वाद माँगने के लिए पवित्र पहाड़ी की अनुष्ठानिक परिक्रमा (परकम्मा) करते हैं।

रामघाट से ऊपर की ओर जानकी कुण्ड

मन्दाकिनी का एक सुंदर विस्तार है, जो भूरे–भूरे और हरे पत्तों के रंगों में प्रकृति की एक सिम्फनी है, नदी के पानी का गहरा नीला रंग आसमान की छत्रछाया में एक हल्की प्रतिध्वनि पाता है। ऐसा कहा जाता है कि इस रमणीय देहाती स्थिति में, सीता राम के साथ अपने वनवास के वर्षों के दौरान क्रिस्टल साफ़ पानी में स्नान करती थीं। निश्चित रूप से, यह शांत स्थान विशेष रूप से धन्य लगता है, क्योंकि पूर्ण सामन्जस्य और शांति की आभा इसे घेरती है, जो इसे रोज़मर्रा की दुनिया की हलचल से अलग करती है। जानकी कुण्ड तक पहुँचने के दो रास्ते हैं–

रामघाट से 2 किमी दूर नाव से, या
सड़क मार्ग से, जो पत्तों से ढकी हुई सड़क से होकर जाती है।

सती अनुसूया

सती अनुसूया नदी के ऊपर की ओर स्थित है, घने जन्गलों के बीच जो पूरे दिन पक्षियों के मधुर सन्गीत से गूंजते रहते हैं। कहा जाता है कि यहीं पर अत्रि मुनि, उनकी पत्नी अनुसूया और उनके तीन पुत्रों (जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश के तीन अवतार थे) ने ध्यान किया था। माना जाता है कि मन्दाकिनी का निर्माण अनुसूया ने किया था, जो शहर से लगभग 16 किमी दूर है और सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है – घने जन्गलों से होकर एक घुमावदार रास्ता।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

स्फटिक शिला

जानकी कुण्ड से कुछ किलोमीटर आगे मन्दाकिनी के तट पर एक घना जन्गल है। आप उस शिलाखण्ड पर चढ़ सकते हैं जिस पर राम के पदचिह्न हैं और जहाँ जयन्त ने कौवे के रूप में सीता को चोन्च मारी थी। यहां नदी में बड़ी मछलियाँ हैं, जो साफ पानी में आसानी से दिखाई देती हैं; और कुछ मन्दिर भी हैं।

गुप्त–गोदावरी

शहर से सड़क मार्ग द्वारा 18 किमी दूर एक पहाड़ी के किनारे पर स्थित एक प्राकृतिक आश्चर्य है। यहां आश्चर्य की बात है कि यहां दो गुफाएँ हैं, एक ऊँची और चौड़ी है, जिसमें से एक प्रवेश द्वार है, जिससे कोई भी व्यक्ति मुश्किल से गुजर सकता है, और दूसरी, लम्बी और सन्करी है, जिसके आधार पर पानी की एक धारा बह रही है। ऐसा माना जाता है कि राम और उनके भाई लक्ष्मण ने दूसरी गुफा में दरबार लगाया था, जिसमें दो प्राकृतिक, सिन्हासन जैसी चट्टानें हैं।

हनुमान धारा

एक खड़ी पहाड़ी से कई सौ फीट ऊपर एक चट्टान पर स्थित है, जिसके बारे में कहा जाता है कि इसे राम ने हनुमान को शांत करने के लिए बनाया था, जब वे लन्का को जलाने के बाद लौटे थे। इस स्थान पर कुछ मन्दिर हैं, जहाँ से चित्रकूट का मनोरम दृश्य दिखाई देता है। यहां एक विशाल पीपल के पेड़ की छाया में एक खुला, पक्का क्षेत्र है, जो लम्बी चढ़ाई के बाद रुकने के लिए एक सुंदर स्थान है।

भरत कूप

वह स्थान है जहाँ भरत ने भारत के सभी तीर्थ स्थानों से एकत्रित पवित्र जल सन्ग्रहित किया था। यह शहर से कुछ किलोमीटर दूर एक छोटा, सुनसान स्थान है।

मड़फा

कामतानाथ से लगभग 20 किलोमीटर दूर भरतकूप मंदिर के ग्राम पंचायत मानपुर के पास मडफा जंगल की चौटी में पंचमुखी महादेव मन्दिर में बसते हैं। मन्दिर तक जाने में 537 सीढ़ी चढ़नी पड़नी है। पंचमुखी शंकर जी को मनोकामना महादेव भी कहते हैं। यह मान्डव्य ऋषि जी की तपोस्थली है, अपभ्रंश हो कर मड़फा शब्द का उपयोग हो गया। महर्षि वाल्मीकि महाकवि कालिदास ने भी अपने ग्रन्थों में इस स्थान का वर्णन किया है। जैन धर्म प्रवर्तक आदिनाथ सहित कई जैन धर्म महाबलंबियों की मूर्तियां आसपास विराजमान है। चंदेल कालीन नगर के अवशेष यहां के ऐतिहासिक महत्व का वर्णन करते हैं।

गुप्त गोदावरी से 4 किमी दूर स्थित मडफा स्थित है।

अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ–साथ झरनों, जल मोचन सरोवर, श्री बालाजी मन्दिर, भगवान शंकर की पंचमुखी प्रतिमा और एक किले के खण्डहरों के लिए प्रसिद्ध है, जिनके बारे में माना जाता है कि इन्हें चंदेल राजाओं ने बनवाया था।

सीतापुर

पयस्वनी के बाएं किनारे पर लगभग 8 किमी दूर स्थित है। कर्वी से, यह कामतानाथ की पवित्र पहाड़ियों से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, जो इसके दक्षिण–पश्चिम में 2 किमी दूर है। तीर्थयात्री पहले सीतापुर में पयस्वनी में स्नान करते हैं और फिर कामतानाथ पहाड़ी की परिक्रमा करने के लिए आगे बढ़ते हैं। मूल रूप से जयसिन्हपुर के नाम से जाना जाने वाला यह शहर पन्ना के राजा अमन सिन्ह द्वारा महंत चरणदास को दिया गया था, जिन्होंने इसे माँ सीता के सम्मान में नया नाम सीतापुर दिया। नदी के किनारे चौबीस घाट और कई मन्दिर हैं, जो शहर की महिमा में इजाफा करते हैं।

पर्यटन Tourism

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

गणेशबाग

11 किमी. बांके सिद्धपुर गांव के पास कर्वी–देवांगना रोड पर गणेशबाग स्थित है, जहां एक समृद्ध नक्काशीदार मन्दिर, एक सात मन्जिला बावली और एक आवासीय महल के खण्डहर अभी भी मौजूद हैं। इस परिसर का निर्माण पेशवा विनायक राव ने गर्मियों में विश्राम के लिए करवाया था और इसे अक्सर मिनी–खजुराहो के रूप में जाना जाता है।

राजापुर

राजापुर चित्रकूट से 42 किमी दूर स्थित है, यह स्थान गोस्वामी तुलसीदास
का जन्म स्थान माना जाता है । यहां एक तुलसी मन्दिर स्थित है।

धारकुण्डीय आश्रम

चित्रकूट भगवान राम के तपस्या स्थल के साथ बुन्देलखण्ड का प्रसिद्ध स्थल है। यह बान्दा मुख्यालय से लगभग 45 किलोमीटर दूर है। सतना के रास्ते में बेहद खूबसूरत आध्यात्मिक स्थान है। यहां पर धारकुण्डीय आश्रम –जो प्रकृति से भरपूर है, रानीपुर वन रेंज में स्थित है।

रानीपुर वन

रानीपुर वन वन्यजीव अभ्यारण के नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है पांडवों के प्रवास के दौरान युधिष्ठिर के बीच सन्वाद यही हुआ था। ऋषियों की तपो स्थली भी रही है। भगवान राम का नाम अयोध्या के बाद चित्रकूट से ही जुड़ता है। रामघाट, आरोग्यधाम, गुप्त गोदावरी, कामद गिरी मन्दिर, सती अनसूया, हनुमान धारा, स्फटिक शिला और अन्य प्राकृतिक और धार्मिक स्थल है।

महोबा

बान्दा मुख्यालय से लगभग 55 किलोमीटर की दूरी पर महोबा स्थित है और महोबा से 5 किलोमीटर की दूर पहाड़ी पर विजय सागर स्थित है। इसे पक्षी विहार के नाम से भी जाना जाता है। यहां से लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर खजुराहो, मध्य प्रदेश भी नजदीक ही कहा जाएगा। बान्दा से या झांसी से खजुराहो जाने वाले लोग महोबा से ही होकर जाते हैं अतः यहां बड़ी सन्ख्या में लोग घूमने आते हैं।

राहिला सागर

चंदेल शासक द्वारा पूर्ण बनवाया गया राहिला सागर व सूर्य मन्दिर भी है इस मन्दिर का नाम रहेला देव के नाम से रखा गया है। परोलिया सागर में कुण्ड और भव्य मन्दिर भी हैं। रु2

कालिन्जर

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में बान्दा ज़िले में स्थित पौराणिक सन्दर्भ वाला एक ऐतिहासिक दुर्ग है। भारतीय इतिहास में सामरिक दृष्टि से यह क़िला काफ़ी महत्त्वपूर्ण रहा है। यह विश्व धरोहर स्थल प्राचीन नगरी खजुराहो के निकट ही स्थित है। कालिन्जर दुर्ग भारत के सबसे विशाल और अपराजेय किला में एक माना जाता है। एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित इस किला में अनेक स्मारकों और मूर्तियों का खजाना है। इन चीज़ों से इतिहास के विभिन्न पहलुओं का पता चलता है। चंदेलों द्वारा बनवाया गया यह किला चंदेल वंश के शासन काल की भव्य वास्तुकला का उम्दा उदाहरण है। इस किला के अंदर कई भवन और मन्दिर हैं। इस विशाल किला में भव्य महल और छतरियाँ हैं, जिन पर बारीक डिज़ाइन और नक्काशी की गई है। किला हिन्दू भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है। किला में नीलकंठ महादेव का एक अनोखा मन्दिर भी है।

88 कि.मी. चित्रकूट से कालिन्जर का अजेय किला स्थित है। एक बार राजाओं और राजवंशों द्वारा वांछित, इसमें नीलकंठ मन्दिर, स्वर्ग रोहन कुण्ड, वनखण्डेश्वर महादेव मन्दिर, शिवसारी गंगा और कोटि तीर्थ शामिल हैं। किले क्षेत्र के भीतर अन्य दिलचस्प स्थान सीता सेज, पाताल गंगा, पांडु कुण्ड, बूढ़ी–टाल, भैरों की झरिया और मृगधारा हैं।

इतिहास

पर्यटन Tourism

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

इतिहास के उतार–चढ़ावों का प्रत्यक्ष गवाह बान्दा जनपद का कालिन्जर किला हर युग में विद्यमान रहा है। इस किला के नाम अवश्य बदलते गये हैं। इसने सतयुग में कीर्तिनगर, त्रेतायुग में मध्यगढ़, द्वापर युग में सिन्हलगढ़ और कलियुग में कालिन्जर के नाम से ख्याति पायी है। कालिन्जर का अपराजेय किला प्राचीन काल में जेजाकभुक्ति साम्राज्य के अधीन था। जब चंदेल शासक आये तो इस पर महमूद ग़ज़नवी, कुतुबुद्दीन ऐबक और हुमायूं ने आक्रमण कर इसे जीतना चाहा, पर कामयाब नहीं हो पाये। अंत में अकबर ने 1569 ई. में यह किलाजीतकर बीरबल को उपहार स्वरूप दे दिया। बीरबल के बाद यह किला बुंदेल राजा छत्रसाल के अधीन हो गया। इनके बाद किला पर पन्ना के हरदेव शाह का क़ब्ज़ा हो गया। 1812 ई. में यह किला अंग्रेज़ों के अधीन हो गया।

कालिन्जर के मुख्य आकर्षणों में नीलकंठ मन्दिर है। इसे चंदेल शासक परमादित्य देव ने बनवाया था। मन्दिर में 18 भुजा वाली विशालकाय प्रतिमा के अलावा रखा शिवलिन्ग नीले पत्थर का है। मन्दिर के रास्ते पर भगवान शिव, काल भैरव, गणेश और हनुमान की प्रतिमाएं पत्थरों पर उकेरी गयीं हैं। इतिहासवेत्ता राधाकृष्ण बुंदेली व बीडी गुप्त बताते हैं कि यहां शिव ने समुद्र मन्थन के बाद निकले विष का पान किया था। शिवलिन्ग की खासियत यह है कि उससे पानी रिसता रहता है। इसके अलावा सीता सेज, पाताल गंगा, पांडव कुण्ड, बुढ्ड़ा–बुढ्डी ताल, भगवान सेज, भैरव कुण्ड, मृगधार, कोटितीर्थ व बलखण्डेश्वर, चौबे महल, जुझौतिया बस्ती, शाही मस्जिद, मूर्ति सन्ग्रहालय, वाऊचोप मकबरा, रामकटोरा ताल, भरचाचर, मजार ताल, राठौर महल, रनिवास, ठा. मतोला सिन्ह सन्ग्रहालय, बेलाताल, सगरा बांध, शेरशाह सूरी का मक़बरा व हुमायूं की छावनी आदि हैं।

इस दुर्ग के निर्माणकर्ता के नाम का ठीक–ठीक साक्ष्य कहीं नहीं मिलता, पर जनश्रुति के अनुसार चंदेल वंश के सन्स्थापक चंद्रवर्मा द्वारा इसका निर्माण कराया गया था। चन्देल शासकों द्वारा कालिन्जराधिपति (कालिन्जर के अधिपति) की उपाधि का प्रयोग उनके द्वारा इस दुर्ग को दिये गए महत्त्व को दर्शाता है। कतिपय इतिहासकारों के मुताबिक़ इस दुर्ग का निर्माण केदारवर्मन द्वारा ईसा की दूसरी से सातवीं शताब्दी के मध्य कराया गया था। कुछ इतिहासकारों का मत है कि इसके द्वारों का निर्माण मुग़ल शासक औरंगज़ेब ने करवाया था। कालिन्जर दुर्ग में प्रवेश के लिए सात द्वार थे। इनमें आलमगीर दरवाजा, गणेश द्वार, चौबुरजी दरवाजा, बुद्धभद्र दरवाजा, हनुमान द्वार, लाल दरवाजा और बारा दरवाजा थे। अब हालत यह है कि समय के साथ सब कुछ बदलता गया। दुर्ग में प्रवेश के लिए तीन द्वार कामता द्वार, रीवां द्वार व पन्नाद्वार हैं। पन्नाद्वार इस समय बंद है।

स्थापत्य

कालिन्जर दुर्ग विंध्याचल की पहाड़ी पर 700 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। दुर्ग की कुल ऊंचाई 108 फ़ीट है। इसकी दीवारें चौड़ी और ऊंची हैं। इनकी तुलना चीन की दीवार से की जाये तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। कालिन्जर दुर्ग को मध्यकालीन भारत का सर्वोत्तम दुर्ग माना जाता था। इस दुर्ग में स्थापत्य की कई शैलियाँ दिखाई देती हैं, जैसे गुप्त शैली, प्रतिहार शैली, पंचायतन नागर शैली आदि। प्रतीत होता है कि इसकी सन्रचना वास्तुकार ने अग्निपुराण, बृहदसन्हिता तथा अन्य वास्तु ग्रन्थों के अनुसार की है। किला के बीचों–बीच अजय पलका नामक एक झील है, जिसके आसपास कई प्राचीन काल के निर्मित मन्दिर हैं। यहां ऐसे तीन मन्दिर हैं, जिन्हें अंकगणितीय विधि से बनाया गया है। दुर्ग में प्रवेश के लिए सात दरवाजे हैं और ये सभी दरवाजे आपस में एक–दूसरे से भिन्न शैलियों से अलन्कृत हैं। यहां के स्तंभों एवं दीवारों में कई प्रतिलिपियां बनी हुई हैं, जिनमें मान्यता के अनुसार यहां के छुपे हुए खजाने की जगह का रहस्य भी छुपा हुआ है।

शिलालेख व प्रशस्तियाँ

कालिन्जर दुर्ग एवं इसके नीचे तलहटी में बसा कस्बा, दोनों ही इतिहासकारों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि यहां मन्दिरों के अवशेष, मूर्तियां, शिलालेख एवं गुफ़ाएं आदि सभी उनके रुचि के साधन हैं। कालिन्जर दुर्ग में कोटि तीर्थ के निकट लगभग 20 हजार वर्ष पुरानी शंखलिपि स्थित है, जिसमें रामायण काल में वनवास के समय राम के कालिन्जर आगमन का भी उल्लेख किया गया है। इसके अनुसार श्रीराम, सीता कुण्ड के पास सीता सेज में ठहरे थे। कालिन्जर शोध सन्स्थान के तत्कालीन निदेशक अरविंद छिरौलिया के कथनानुसार इस दुर्ग का विवरण अनेक हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों जैसे पद्मपुराण व वाल्मीकि रामायण में भी मिलता है। इसके अलावा बुड्ढा–बुड्ढी सरोवर व नीलकंठ मन्दिर में नौवीं शताब्दी की पांडुलिपियां सन्चित हैं, जिनमें चंदेल वंश कालीन समय का वर्णन मिलता है।

दुर्ग के प्रथम द्वार में 16वीं शताब्दी में औरंगज़ेब द्वारा लिखवाई गई प्रशस्ति की लिपि भी है। दुर्ग के समीपस्थ ही काफिर घाटी है। इसमें शेरशाह सूरी के भतीजे इस्लामशाह की 1545 ई. में लगवायी गई प्रशस्ति भी यहां उपस्थित

है। इस्लामशाह ने अपना दिल्ली पर राजतिलक होने के बाद यहां के कोटि तीर्थ में बने मन्दिरों को तुड़वाकर उनके सुन्दर नक्काशीदार स्तंभों का प्रयोग यहां बनी मस्जिद में किया था। इसी मस्जिद के बगल में एक चबूतरा बनवाया था, जिस पर बैठकर उसने ये शाही फ़रमान सुनाया था कि अब से कालिन्जर कोई तीर्थ नहीं रहेगा एवं मूर्ति–पूजा को हमेशा के लिये निषेध कर दिया था। इसका नाम भी बदल कर शेरशाह की याद में श्शेरकोहश (अर्थात शेर का पर्वत) कर दिया था। बी. डी. गुप्ता के अनुसार कालिन्जर के यशस्वी राजा व रानी दुर्गावती के पिता कीर्तिवर्मन सहित उनके 72 सहयोगियों की हत्या भी उसी ने करवायी थी। दुर्ग में ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्त्व के ढेरों शिलालेख जगह–जगह मिलते हैं, जिनमें से अनेक लेख हजारों वर्ष पूर्व अति प्राचीन काल के भी हैं।

नीलकंठ मन्दिर

किला के पश्चिमी भाग में कालिन्जर के अधिष्ठाता देवता नीलकंठ महादेव का एक प्राचीन मन्दिर भी स्थापित है। इस मन्दिर को जाने के लिए दो द्वारों से होकर जाते हैं। रास्ते में अनेक गुफ़ाएँ तथा चट्टानों को काट कर बनाई शिल्पाकृतियाँ बनायी गई हैं। वास्तुशिल्प की दृष्टि से यह मन्डप चंदेल शासकों की अनोखी कृति है। मन्दिर के प्रवेश द्वार पर परिमाद्र देव नामक चंदेल शासक रचित शिवस्तुति है व अंदर एक स्वयंभू शिवलिन्ग स्थापित है। मन्दिर के ऊपर ही जल का एक प्राकृतिक स्रोत है, जो कभी सूखता नहीं है। इस स्रोत से शिवलिन्ग का अभिषेक निरंतर प्राकृतिक तरीके से होता रहता है। बुन्देलखण्ड का यह क्षेत्र अपने सूखे के कारण भी जाना जाता है, किन्तु कितना भी सूखा पड़े, यह स्रोत कभी नहीं सूखता है। चन्देल शासकों के समय से ही यहां की पूजा–अर्चना में लीन चन्देल राजपूत जो यहां पण्डित का कार्य भी करते हैं, वे बताते हैं कि शिवलिन्ग पर उकेरे गये भगवान शिव की मूर्ति के कंठ का क्षेत्र स्पर्श करने पर सदा ही मुलायम प्रतीत होता है। यह भागवत पुराण के सागर मन्थन के फलस्वरूप निकले हलाहल विष को पीकर, अपने कंठ में रोके रखने वाली कथा के समर्थन में साक्ष्य ही है। मान्यता है कि यहां शिवलिन्ग से पसीना भी निकलता रहता है।

गुरुद्वारा

बान्दा में एक ही गुरुद्वारा है जो शहर के मुख्य स्थल पीली कोठी और पीली कोठी इलाके में स्थित है। 250 से अधिक या लगभग सिंधि परिवार पूरे शहर में रह रहे हैं लेकिन 60 से अधिक सिंधी समाज के लोग गुरुद्वारे में पहुंच पाते हैं।

ऊपरी भाग स्थित जलस्रोत हेतु चट्टानों को काटकर दो कुण्ड बनाए गए हैं, जिन्हें स्वर्गारोहण कुण्ड कहा जाता है। इसी के नीचे के भाग में चट्टानों को तराशकर बनायी गई कालभैरव की एक प्रतिमा भी है। इनके अलावा परिसर में सैकड़ों मूर्तियाँ चट्टानों पर उत्कीर्ण की गई हैं। शिवलिन्ग के समीप ही भगवती पार्वती एवं भैरव की मूर्तियाँ भी स्थापित हैं। प्रवेश द्वार के दोनों ही ओर ढेरों देवी–देवताओं की मूर्तियां दीवारों पर तराशी गयी हैं। कई टूटे स्तंभों के परस्पर आयताकार स्थित स्तंभों के अवशेष भी यहां देखने को मिलते हैं। इतिहासकारों के अनुसार इन पर छह मन्जिला मन्दिर का निर्माण किया गया था। इसके अलावा भी यहां ढेरों पाषाण शिल्प के नमूने हैं, जो कालक्षय के कारण जीर्णावस्था में हैं।

निकटवर्ती दर्शनीय स्थल

यहां ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कई दर्शनीय स्थल हैं, जो पुरा–पाषाण काल से बुन्देल शासकों के समय तक के हैं। इनमें रौलीगोंडा, मईफ़ा, बिल्हरियामठ, ऋषियन, शेरपुर श्योढ़ा, रनगढ़, अजयगढ़, आदि हैं। प्राकृतिक दृष्टि से आकर्षक स्थलों की भी कमी नहीं है। इनमें बाणगंगा, व्यासकुण्ड, भरत कूप, पाथरकछार, बृहस्पति कुण्ड, लखनसेहा, किशनसेहा, सकरों एवं मगरमुहा, आदि आते हैं। इन स्थानों में अनेक खनिज एवं विभिन्न वन सम्पदाएं भी मिलती हैं।

विश्व धरोहर हेतु प्रयास

इस ऐतिहासिक स्थल की राज्य सरकार द्वारा पूरी तरह से देखरेख के अभाव में स्थल का अनुरक्षण कार्य भली–भांति नहीं हो पा रहा है। भारतीय पुरातात्त्विक सर्वेक्षण विभाग भी बजट में राशि की कमी के कारण इस स्थल को देय योगदान नहीं दे पा रहा है। अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड विकास मन्च के प्रयासों से इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित कराने हेतु अथक प्रयास किये गए हैं, जिनमें अब पुरातत्त्व विभाग भी जुड़ गया है। विश्वदाय स्थल कराने हेतु यहां लगभग सभी मानदंड पूरे होते हैं। एक बार यूनेस्को की इस सूची में कालिन्जर के जुड़ जाने पर यह स्थल विश्व के पर्यटन मानचित्र में जुड़ जाएगा। भारत भ्रमण के उत्सुक देशी–विदेशी पर्यटक यहां आना चाहेंगे, जिसके लिए सभी प्रकार के आवागमन साधनों के द्वारा कालिन्जर को यातायात से जोड़ दिया जायेगा। यहां पर्यटकों की

आवक में वृद्धि होने से क्षेत्र में रोजगार के साधन बढ़ेंगे। यहां कम से कम दो–तीन लाख पर्यटक वार्षिक आने की सम्भावना है। इस कारण इस क्षेत्र के विकास को भी तेज़ी मिलेगी।

व्यवसायिक महत्त्व

कालिन्जर दुर्ग व्यवसायिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यहां पहाड़ी खेरा और बृहस्पतिकुण्ड में उत्तम कोटि की हीरा खदानें हैं। दुर्ग के समीप कुठला जवारी के जन्गल में लाल रंग के चमकदार पत्थर से प्राचीन काल में सोना बनाया जाता था। इस क्षेत्र में पर्तदार चट्टानें व ग्रेनाइट पत्थर काफी है, जो भवन निर्माण में काम आता है। साखू, शीशम, सागौन के पेड़ बहुतायत में है। इनसे काष्ठ निर्मित वस्तुएं तैयार होती हैं।

वनौषधियों का भंडार

दुर्ग में नाना प्रकार की औषधियां मिलती हैं। यहां मिलने वाले सीताफल की पत्तियां व बीज औषधि के काम आते हैं। गुमाय के बीज भी उपचार के काम आते हैं। हर्र का उपयोग बुखार के लिए किया जाता है। मदनमस्त की पत्तियां एवं जड़ उबालकर पी जाती है। कंधी की पत्तियां भी उबाल कर पी जाती है। गोरख इमली का प्रयोग अस्थमा के लिए किया जाता है। मारोडफली का प्रयोग उदर रोग के लिए किया जाता है। कुरियाबेल का इस्तेमाल आंव रोग के लिए किया जाता है। घुंचू की पत्तियां प्रदर रोग के लिए उपयोगी है। इसके अलावा फल्दू, कूटा, सिन्दूरी, नरगुंडी, रूसो, सहसमूसली, लाल पथरचटा, गूमा, लटजीरा, दुधई व शिखा आदि औषधियां भी यहां उपलब्ध है।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ सौजन्य साभार

रु1 बुन्देलखण्ड अनुसन्धान पोर्टल
(सूचना)बुन्देलखण्ड छत्रसाल सन्ग्रहालय, बान्दा

रु2 फाइल बान्दा हिस्ट्री कालिन्जर

कालिन्जर–बान्दा इन्फो डाट कॉम

पर्यटन Tourism